

प्रज्ञा, नई दिल्ली एवं लोकायन संस्था, मुंबई के संयुक्त तत्त्वाधान से तथा
एसजीटी विश्वविद्यालय, गुरुग्राम, हरियाणा के सहयोग से


राष्ट्रीय संशोधन परिषद 3.0



**Lokayan
National Research
Conference 3.0**

4, 5 एवं 6 जून 2026 - @ गुरुग्राम, हरियाणा

भारतीय लोक संस्कृति के लोकनायक नायिका की समाज के प्रति भूमिका एवं सामाजिक अवदान

(रंगमंच, सिनेमा, नृत्य, संगीत एवं मीडिया अध्येताओं, कलाकार, उत्साही दर्शक एवं शोधार्थी)

लोककला यह जनमानस की कला मानी गई, इसी कारण से वह सहज एवं सरल बनी रही। लोककला एवं लोकसाहित्य के क्षेत्र में लोकनायक एवं नायिकाओं ने अहम भूमिका निभाई हैं। नायक एवं नायिका उन्हें कहते हैं जो अपने जीवन में कोई ऐसा काम करें जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाए। उस कार्य के लिए सबकुछ समर्पित कर दें; अपने लिए नहीं तो अपने देश के लिए, समाज के लिए! सम्पूर्ण मानवजाती के न्याय और अधिकार के लिए कार्य करें। जहां आवश्यकता हो वहां सारे जग से लड़ जाए।

हम यहाँ बात करेंगे ऐसे लोकनायक और लोकनायिकाओं की जैसे संत, महंत, पंत, पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक पात्रों की जिनकी महती लोक कथाओं ने उजागर की हो और लोकगीतों ने गायी हो। गंभीर सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को लेकर आवाज उठाई हो। सामाजिक अवदान में विशेष कार्य किया हो।

सामाजिक समरसता शब्द अब सामाजिक जीवन में व्यापक हो गया है। सामाजिक स्तर पर भेदभाव समाप्त होना चाहिए और सभी समाज एक समान स्तर पर आकर समानता का जीवन जीना चाहिए। ऐसी अपेक्षा ही सामाजिक समरसता शब्द का आधार है।

यद्यपि सामाजिक आंदोलनों के लिए समरसता शब्द नया है, परंतु यह बहुत पुराना है। यह शब्द संत ज्ञानेश्वर, महात्मा बसवेश्वर, संत एकनाथ, संत तुकाराम के साहित्य में मिलता है। समरसता शब्द का प्रयोग संत साहित्य में एक हो जाने के अर्थ में किया गया है।

प्रबोधन काल में सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा अंध-रिवाजों को दूर करने के लिए लम्बे समय तक प्रयास किए गए। अनेक महापुरुषों के प्रयासों से ही हमारे देश में सामाजिक परिवर्तन लाया जा सका। इन प्रयासों को हम सामाजिक समानता के आंदोलन के रूप में जानते हैं।

देश की आजादी के पश्चात राज्य के संविधान के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय को आधार मानकर सामाजिक जीवन में बदलाव लानेवाले कानून बनाए गए। अस्पृश्यता को कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया। समानता के लिए कानूनी संरक्षण प्रदान किया गया। इस पृष्ठभूमि पर हम देखते हैं कि कानून द्वारा समानता स्थापित की गई; किन्तु व्यवहार में असमानता बनी रही। सामाजिक स्तर पर जातिगत भेदभाव और

छुआछूत का अनुभव होता रहा। असमानता मानव मन का रोग है। मानव जीवन में भेदभाव पहले मन में पैदा होते हैं और फिर क्रिया में प्रकट होते हैं।

इन गंभीर विषयों के साथ लोकसंस्कृति के लोकनायक तथा लोकनायिकाओं ने सामाजिक समरसता के लिए अनेक निराले ढंग से अपनी बात रखी, कहीं आंदोलन किए तो कहीं अपना जीवन समर्पित कर, एक नया इतिहास रचा। इन्हीं गहरी बातों पर आपके शोध पत्र आमंत्रित हैं। इस विषय से संबंधी कुछ उप विषय भी प्रस्तुत हैं किन्तु यह परिषद इसी विषयपर होगी किन्तु बिन्दु सीमित ना रहकर अनुसंधान विषय पर जुड़ी आपकी विस्तृत जानकारी का स्वागत करती हैं।

रंगमंच, सिनेमा, नृत्य, संगीत, लोकसाहित्य एवं मीडिया अध्येताओं, कलाकार, उत्साही दर्शक एवं शोधार्थी का प्राथमिक उत्तरदायित्व है कि वे उपरोक्त विषय में गहन अध्ययन की भूमिका रखे।

भारतीय लोक संस्कृति के लोकनायक नायिका की समाज के प्रति भूमिका एवं सामाजिक अवदान जैसे विस्तृत शीर्षक के अंतर्गत सम्मेलन निम्न उपशीर्षकों पर केन्द्रित होगा परंतु इन्हीं तक सीमित नहीं रहेगा।

निम्न बिन्दुओं पर शोधपत्र आमंत्रित हैं किन्तु इन बिन्दुओं के अतिरिक्त भी बिन्दु जिसपर आप प्रकाश डालना चाहे उसका हम स्वागत करते हैं।

परिषद के मुख्य बिन्दु

1. लोकनायक – नायिका और सामाजिक अवदान
2. सामाजिक अवदान में समस्याएं,
3. सामाजिक समरसता एवं विवाह संस्था,
4. लोककला और सामाजिक समरसता
5. लोकसाहित्य और सामाजिक अवदान
6. संत और सामाजिक समरसता,
7. लोकगीत में सामाजिक समरसता,
8. लोककथाओं में सामाजिक अवदान,
9. राजनीति और सामाजिक अवदान,
10. सांस्कृतिक क्षेत्र और सामाजिक अवदान,
11. गाँव एवं शहरी सामाजिक समरसता,
12. लोकमानस एवं सामाजिक अवदान,
13. महिलाएं एवं सामाजिक समरसता,
14. सामाजिक समरसता एवं आत्मसम्मान – आत्मभान
15. समाजशास्त्र एवं सामाजिक अवदान,
16. सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक अवदान,
17. लोकसंस्कृति एवं सामाजिक अवदान,
18. संविधान एवं सामाजिक समरसता,
19. रूढ़ि, परंपरा एवं सामाजिक समरसता,
20. सामाजिक समरसता के उपाय एवं योजना,
21. जनजाति एवं सामाजिक अवदान,
22. सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान

उपरोक्त सुझाये विषयो पर आधारित शोध पत्र आमंत्रित है. जो निम्न लिखित चौखट में भेजे।

1. शोध पत्र की भाषा - हिंदी / English
2. शोध पत्र का शीर्षक
3. लेखक का नाम और E-mail
4. लेखक का संक्षिप्त परिचय 100 शब्दों में
5. शोध पत्र शब्द मर्यादा 2000 से 2500 तक
6. हिंदी Unicode Kokila, फॉन्ट साइज - 14 / English - Arial फॉन्ट साइज -12

lokaayan@gmail.com इस ईमेल एड्रेस पर भेजे।

सम्मलेन की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए सभी शोध पत्र एक विशेषज्ञ समिति द्वारा अनुमोदित और स्वीकृत किए जाएंगे। जिससे विषय से इतर व अप्रासंगिक प्रस्तावों को रोका जा सके। चुनिंदा शोध पत्र ISBN के साथ प्रकाशित होंगे।

शोधपत्र प्रस्ताव के प्रारूप प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश

शोध पत्रों का संक्षिप्त प्रारूप निम्न बिन्दुओं पर केन्द्रित होना चाहिए

- समस्त प्रारूप पूर्व-समीक्षा (peer review) के पश्चात ही स्वीकार किए जाएंगे। अतः दिशा निर्देशों को ध्यान से पढ़ें और उसी के अनुरूप प्रस्ताव का प्रारूप प्रस्तुत करें।
- प्रारूप की अधिकतम शब्द सीमा 400 शब्द है। जिसका यथासंभव पालन होना आवश्यक है।
- प्रथम 2-3 पंक्तियों में शोधपत्र का महत्व तथा पूर्व में किए गए अध्ययन का उल्लेख होना चाहिए।
- 2-3 पंक्तियों में प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए।
- आगामी 4-5 पंक्तियों में अध्ययन में प्रयुक्त शोध प्रवधि का संक्षिप्त वर्णन एवं शोध परिणामों का उल्लेख होना चाहिए। तत्पश्चात 2-3 पंक्तियों में संक्षिप्त शोध विमर्श एवं अंतिम भाग।
- शोध प्रारूप के अंत में 4-5 बीज शब्द (key words) होने चाहिए।
- अंत में शोध का औपचारिक समापन होना चाहिए।

शोध पत्र प्रस्तुतीकरण के लिए दिशा निर्देश

- सामान्य सत्रों के लिए शोध पत्र की सीमा 15 मिनट से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- शोधार्थियों के लिए यह 10 मिनट की अवधि में सीमित होना चाहिए।
- सभी शोध प्रस्तावों में मुख्य लेखक, द्वितीय लेखक एवं अन्य सहायक लेखकों (यदि दो से अधिक लेखक हैं) का नाम स्पष्ट होना चाहिए। शोध परवेक्षक का नाम सम्मिलित नहीं होना चाहिए।
- शोधार्थियों को अपने विभाग से छात्र पहचान पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- शोध पत्र प्रस्तुति के लिए आवश्यक उपकरणों का उल्लेख करें, जैसे पावरपॉइंट प्रॉजेक्टर आदि।
- 100-150 शब्दों में संक्षिप्त स्व-परिचय (bio-data) पृथक से लिखें।

अंतिम तिथियाँ

संक्षिप्त प्रारूप (abstract) प्रस्तुति	28 फरवरी, 2026
स्वीकृति सूचना	10 मार्च, 2026
सम्पूर्ण पत्र प्रस्तुति	15 अप्रैल, 2026

पंजीकरण शुल्क

अभ्यासक	-	4,500/-	} 15 अप्रैल, 2026
शोधार्थी	-	4000/-	

✓ इस तिथि के पश्चात प्राप्त शोध पत्रों के प्रकाशन पर विचार नहीं किया जाएगा।
कॉन्फरन्स में कीट, सांझे आधार (sharing basis) पर 3 रात्रि के लिए उचित आवासीय सुविधा,
नाश्ता, चाय, दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन समाहित है।

3 जून रात्रि से 6 जून शाम तक

संकल्पना

डॉ मोनिका ठक्कर

अध्यक्ष,
लोकायन संस्था, मुंबई

संयोजक

श्री कमलाकांत पाठक

एसोसिएट डायरेक्टर,
प्रज्ञा, नई दिल्ली

सचिव

सुश्री अभिलाषा सेमवाल

एसजीटी विश्वविद्यालय,
गुरुग्राम, हरियाणा

संपर्क : # 8850385129



Lokayan
Cultural, Educational, Social and
Multipurpose Organisation



Under the patronage of
Lokayan Sanstha, Mumbai and Pragya, New Delhi jointly organized in
collaboration with **SGT University, Gurugram, Haryana**



Lokayan National Research Conference 3.0

4, 5 & 6 June 2026 - @ Gurugram, Haryana

The role of the folk heroes and heroines of Indian folk culture in the Society and their social contribution.

(Theatre, cinema, dance, music and media scholars, artists, enthusiastic audience and researchers)

Folk art is considered to be the art of the masses, due to which it remained natural and simple. Folk heroes and heroines have played an important role in the field of folk art and folk literature. Here, the heroes and heroines are those who do something in their life that brings positive change in the society. They dedicate everything for that work; if not for themselves then for their country and society! They work for the justice and rights of the entire humanity. Wherever required, they fight the whole world. Here we will talk about such folk heroes and heroines like Saints, Abbots, Highly Learned persons or even the Mythological, Historical, Social characters whose greatness has been highlighted by folk tales and sung through folk songs. They have raised their voice on serious social and cultural issues. They have done exceptional and unique work for social harmony.

The word 'social harmony' has now become widespread in social life. Discrimination at the social level should end and all societies should be treated equally and live a life of equality. Such expectation is the main base of the term Social Harmony.

Although the term harmony is new for social movements, it has very old roots. This term called 'Harmony' is found in the literature of *Saint Dnyaneshwar, Mahatma Basaveshwar, Saint Eknath* and *Saint Tukaram*. The term harmony has been used in this literature of Saints in the sense of harmonious or getting merged.

During the enlightenment era, efforts were made for a prolonged period to remove the evils, superstitions and blind customs prevalent in social life. Only after the efforts of

many great Souls, social reforms and the change could be brought in our country. We know these efforts as the movement for the social equality.

After our country got independence, laws were made through the constitution of the state to bring about change in social life based on freedom, equality, fraternity and justice. Untouchability was abolished by the law. Legal protection was provided for the equality. On this background, we see that equality was established by the law but in the daily routine practice, inequality remained as it was. Caste discrimination and Untouchability continued to be experienced at almost all the social levels. Inequality is a disease of the human mind. In human life, discrimination first arises in the mind and then manifests in action.

Folk heroes and heroines of our folk culture expressed their views on these serious issues in many unique ways for social harmony, sometimes they pioneered the movements and sometimes dedicated their lives and created a new history. Your research papers are invited on these deep matters. Some sub-topics related to this main subject are also welcome, but this council will appreciate your detailed information related to the main research topic

(It is the primary responsibility of theatre, cinema, dance, music, folk literature and media scholars, artists, enthusiastic audience and researchers to ensure in-depth study in the above subject.)

The conference will focus mainly on the subject under the broad headings like “The role of the folk heroes and heroines of Indian folk culture in the Society and their social contribution” but it will also focus on the following sub-headings and will not be limited to these.

(Research papers are invited on the following points, but we also welcome any point other than these on which you wish to throw light.)

Key points of the Conference

1. The Hero & Heroines of Indian Folk Culture and the social contribution
2. Difficulties in social contribution, 3. social harmony and the organization of Marriage,
4. Folk art and social harmony, 5. Folklore and social harmony, 6. Saints and Social harmony, 7. Social harmony in folk songs, 8. Social harmony in folk tales, 9. Politics and Social Harmony
10. Cultural field and Social Harmony, 11. Rural and Urban social harmony, 12. Folk Beliefs and social harmony, 13. Women and social harmony, 14. Social harmony and self-respect – self-consciousness
15. Sociology and social harmony, 16. Social changes and social harmony,
17. Folk culture and social harmony, 18. Constitution and social harmony, 19. Customs, Traditions and social harmony, 20. Measures and plans for social harmony, 21. Tribals and social harmony, 22. social harmony and cultural revival

Research papers are invited on the above suggested topics. This is to be sent in the following format:

1. Language of research paper: Hindi / English
2. Title of research paper
3. Author's name and E-mail
4. Brief introduction of the author in 100 words
5. Research paper words limit from 2000 to 2500
6. Hindi Unicode Kokila font size 14 / English - Arial font size -12

Send to this email address : lokaayan@gmail.com

Keeping in view the quality of the conference, all the research papers will be approved and accepted by an expert committee so that off-topic and irrelevant proposals can be prevented. Selected research papers will be published with ISBN.

Necessary guidelines for submission of research paper proposal format

The brief format of research papers should focus on the following points

All formats will be accepted only after peer review, so read the guidelines carefully and submit the proposal format accordingly.

- The maximum word limit of the Abstract is 400 words which must be followed as far as possible.
- In the first 2-3 lines, the importance of the research paper and the studies done earlier should be mentioned.
- The objectives of the study presented in 2-3 lines should be clear.
- In the next 4-5 lines, a brief description of the research methodology used in the study and the research results should be mentioned, followed by a brief research discussion in 2-3 lines and the last part.
- There should be 4-5 key words at the end of the research paper.
- There should be a formal conclusion of the research.

Guidelines for Research Paper Submission and Presentation

- The duration of research paper for general sessions should not exceed 15 minutes.
- For research scholars, it should be limited to a period of 10 minutes.

- All research proposals should clearly name the main author, second author and other supporting authors (if there are more than two authors). Investigator's name should not be included on research paper.
- It is mandatory for research scholars to submit student ID card and letter from their department.
- Mention the equipment required for research paper presentation like power point projector etc.
- Separately write brief self-introduction (bio data) in 100-150 words.

Last Dates

Abstract Presentation-	28 February 2026
Acceptance Notice -	10 March 2026
Complete Paper send -	15 April 2026

Registration fees

For Scholer – 4,500/-
For Student – 4000/-

15 April 2026

- ✓ Research papers received after this date will not be considered for publication.

Includes in conference Kit, Proper accommodation for 3 nights on sharing basis, breakfast, tea, lunch and dinner.

June 3 Night to June 6 Evening

CONCEPT
Dr. Monika Thakkar
President,
Lokayan Sanstha, Mumbai

CONVENOR
Mr. Kamlakant Pathak
Associate Director,
Pragya, New Delhi

SECRETARY
Miss Abhilasha semwal
SGT University,
Gurugram, Haryana

Contact: # 8850385129



Lokayan
Cultural, Educational, Social and
Multipurpose Organisation

